Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 622–628

THE ARTISTIC EXPRESSION OF TAPAN SHANTIKARI
तपन शान्तिकारी की कलात्मक अभिव्यक्ति

Sanjay Kumar [1]

[1] Research Scholar, Department of Plastic Arts, Faculty of Visual Arts, Banaras Hindu University, Varanasi, (Uttar Pradesh), India

Corresponding Author

Sanjay Kumar,
Sanjay.bhu78@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.1795

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: Tapan Shantikari started his artistic practice in 1968. Apart from being a skilled sculptor, he also made valuable contributions as an art teacher at Banaras Hindu University. Shantikari's work presents a unique amalgamation of Indian traditional aesthetics and modern artistic techniques, which is especially reflected in his sculptures and terracotta murals. We take a closer look at Shantikari's artistic practice, which includes creative experiments with various mediums such as terracotta, metal and stone. As a sculptor, Shantikari has created a distinct artistic style. His sculptures, especially his terracotta murals depicting the local culture of Banaras, include the Ghats of Banaras, rivers, plants, birds, animals, and geometric and abstract shapes that highlight how he has incorporated the rich cultural heritage of Banaras in his artworks. The key objective of this paper is that Shantikari's art represents a significant contribution to Indian contemporary sculpture, bridging the gap between traditional themes and modern artistic expression. The influence of his work can be seen in a new generation of artists and provides valuable insights into the development of Indian sculpture in the late 20th century.

Hindi: तपन शान्तिकारी ने 1968 में कलात्मक अभ्यास प्रारंभ किया। एक अच्छे मूर्तिकार होने के साथ-साथ इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में कला शिक्षक के रूप में बहुमूल्य योगदान दिया। शान्तिकारी का कार्य भारतीय पारंपरिक सौंदर्यशास्त्र और आधुनिक कलात्मक तकनीकों का एक अनूठा संगम प्रस्तुत करता है, जो विशेष रूप से उनकी मूर्तियों और टेराकोटा म्यूरल में परिलक्षित होता है। हम शान्तिकारी के कलात्मक अभ्यास को गहनता से देखेंगे जिसमें टेराकोटा, धातु और पत्थर जैसे विभिन्न माध्यमों के साथ रचनात्मक प्रयोग किया है मूर्तिकार के रूप में शान्तिकारी ने अपनी एक अलग कलात्मक शैली गढ़ ली थी। इनके मूर्तिशिल्पों में विशेष रूप से बनारस के स्थानीय संस्कृति को दर्शाने वाले उनके टेराकोटा म्यूरल्स में बनारस के घाट, नदी, पेड़-पौधे, पक्षी, जानवर, ज्यामितिक और अमूर्त आकार शामिल है। जो इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे इन्होंन बनारस की समृद्ध संस्कृति और विरासत को अपने कलाकृतियों में समाहित किया है। इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्यों में शान्तिकारी की कला भारतीय समकालीन मूर्तिकला में एक महत्वपूर्ण योगदान का प्रतिनिधित्व करती है, जो पारंपरिक विषयों और आधुनिक कलात्मक अभिव्यक्ति के बीच की खाई को पाटती है। उनके कार्य का प्रभाव नई पीढ़ी के कलाकारों पर देखा जा सकता है और 20वीं सदी के अंत में भारतीय मूर्तिकला के विकास में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

Keywords: Tapan Shantikari, Indian Sculpture, Stone, Metal, Terracotta Mural, Contemporary Art, Artistic Innovation, तपन शान्तिकारी, भारतीय मूर्तिकला, प्रस्तर, धातु, टेराकोटा म्यूरल, समकालीन कला, कलात्मक नवाचार

1. प्रस्तावना

तपन शान्तिकारी के मूर्तिशिल्प सदियों से संवाद करती हैं जहा परम्पराओं का ताना-बाना है वही आधुनिकता से सरोकार भी है कला में प्रयोगधर्मिता के पक्षधर शान्तिकारी की कलाकृतियाँ देखेंगे तो बनारस की संस्कृति औचक ही आपसे संवाद करने लगेंगी।

शान्तिकारी मुख्यतः मूर्तिकार के रूप में जाने जाते हैं किंतु उनकी रुचि छापा कला में भी देखने को मिलती है। इन्होंने आरंभ से ही कला में सामग्री और तकनीक की नवीनता पर बल दिया है कई एक माध्यम में कार्य किया परंतु मिट्टी में इन्होंने आरंभ से ही मूर्तिशिल्प रचना करना जारी रखा और म्यूरल के कार्यों मे उन्होंने अपने आप को साधा और मूर्तिकला में इन्होंने आरंभ से ही लिक से हटकर अपनी पहचान बनायी, इस संवाद में उनके कलाकर्म के साथ संजोया गया है।

इशी गैलरी, राम छाठपार शिल्प न्यास, वाराणसी में तपन शान्तिकारी का Celebrating the life of Tapan Shantikari, 1947-2003 नाम 3rd to 16th July 2023 को इस प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शनी महान अग्रणी कलाकार को श्रद्धांजलि देने के लिए और आज के नवोदित कला छात्रों को मार्गदर्शन देने में उनके इस प्रदर्शनी का महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा। शान्तिकारी ने ईमानदारी और समर्पण के साथ मूर्तिशिल्पों की रचना की है। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन दृश्य कला संकाय के भूतपूर्व संकाय प्रमुख श्री श्यामलदास गुप्ता ने किया और प्रदर्शनी का संयोजक, राम छाठपार शिल्प न्यास के संस्थापक व समकालीन मूर्तिकार मदनलाल के द्वारा किया गया है।

चित्र 1 प्रदर्शनी का विज्ञापन-पत्र

तस्वीर का श्रोतः लेखक

चित्र 2 प्रदर्शनी का एक दृश्य, इशी गैलरी, राम छाठपार शिल्प न्यास, वाराणसी

तस्वीर का श्रोतः लेखक

चित्र 3 टेराकोटा म्यूरल
तस्वीर का श्रोतः लेखक

तपन शान्तिकारी की कला यात्रा बनारस से शुरू हुई थी। इनके प्रारंभिक वर्षों से लेकर बाद के सरल ज्यामितिक और प्राकृतिक आकार के प्रयोग को देखने से उनके गहरे अनुभवों का एहसास होता है। शान्तिकारी ने चित्रकार व शिल्पकार के रूप में अपनी एक स्वतंत्र अभिव्यक्ति, भंगिमा अथवा शैली गढ़ ली थी, शान्तिकारी ने कांस्य, प्रस्तर, टेराकोटा, रेखा-चित्र, छापा कला, आदि माध्यमों में काम किया पर मिट्टी में जाकर वह अपनी रचनात्मकता को अधिक आत्मीय होकर पहचान पाते हैं मिट्टी उनकी प्रिय रचना सामग्री है, मिट्टी में क्या-क्या हो सकता है उन्होंने यह जाना कि म्यूरल भी बन सकता है, मूर्तिशिल्प भी बनाया जा सकता है।1 मिट्टी में ही बनारस को उन्होंने अपने दृष्टिकोण से देखा और उसे प्रदर्शित करने का प्रयास किया।

खासकर बनारस के घाट, नदी, प्रकृति जीवन का चित्रण कर आंतरिक मनोभावों को शानदार ढंग से उजागर किया है। हम भाग्यशाली थे कि हमें महत्वपूर्ण मूर्तिशिल्पों को देखने व उनके तकनीकी कौशल को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। रेखांकन को तो शान्तिकारी अपनी प्रिय विधा-बल्कि एक तरह का फितूर मानते रहे हैं। इनके रेखा-चित्रों में बनारस के घाट दैनिक जीवन में होने वाली घटनाओं को ज्यामितिय, अमूर्त आकार के द्वारा हल्की स्केचिंग तो कहीं कागज पर स्याही से छोटे-छोटे रेखा चित्र बनाए हैं। रेखा-चित्रों में ज्यामिति, अमूर्त आकर ज्यादा दिखाई देता है। एक मूर्तिशिल्पी को रेखांकन का गहरा ज्ञान न हो तो वह अपने रूपाकारों को समृद्ध नहीं कर सकता है। मेरा यह सोचना और अनुभव भी है कि बिना रेखांकन की मास्टरी के एक मूर्तिशिल्पी बन ही नहीं सकता है।2 मूर्तिकला के इतिहास में माइकल एंजेलो, अगस्टे रोडिन, ब्रांकुसी, हेनरी मूर आदि सभी महान मूर्तिशिल्पियों की ताकत उनके रेखांकनों में भी दिखती है।3

एक सच्चे मूर्तिशिल्पी की तरह शान्तिकारी के स्केच का भी अपना विशिष्ट महत्त्व है। काम शुरू करने से पहले वह रेखाओं से खूब खेलते हैं। उनकी रेखाओं में भी ताकत है। वह चाहते तो उन्हें एक स्वतंत्र अस्तित्व दे सकते थें। लेकिन मिट्टी और आग का रचनात्मक खेल ही उन्हें सुहाता है।4

चित्र 4 रेखा-चित्र, कागज पर स्याही
तस्वीर का श्रोतः लेखक

चित्र 5 टेराकोटा म्यूरल
तस्वीर का श्रोतः लेखक

श्यामलदास गुप्ता ने तपन शान्तिकारी के बारे में बताते हुए कहा कि शान्तिकारी का जब सन् 1968 में छात्र के रूप में दृश्य कला संकाय प्रथम वर्ष में प्रवेश हुआ था तब से लेकर जब वह अध्यापक बनकर संकाय में आये इस दौरान बीच में दो वर्ष जम्मू विश्वविद्यालय में और फिर दो वर्ष शांतिनिकेतन विश्वविद्यालय गये थे, फिर वो दृश्य कला संकाय आए तब से मैं उनसे परिचित हूँ वह मेरे छात्र थे और फिर दृश्य कला संकाय में अध्यापक भी बने। उनका व्यक्तित्व अद्भुत था, वह अपने धुन में रहते थें, अपने विषय पर गहराई से सोचा करते थे और सोचते-सोचते बहुत कुछ भूल भी जाया करते थे, शान्तिकारी का सोचने का ढंग ऐसा था कि वह सोचते थे और सोचते-सोचते वो अपने ही जाल में फंस जाते थे कभी-कभी वह मुझसे बातचीत किया करते थे कि सर मैं इस उलझन से निकल नहीं पा रहा हूँ और उससे बाहर निकलने के लिए उन्होंने बहुत प्रयत्न किया। इसी दौरान कुछ काम करते-करते उसी में खो जाते थे, उनका मानसिक तनाव आपको उनकी रचनाओं में दिखेगा और कुछ काम बहुत अनायास ही निकल आया ऐसा होता है उसके लिए प्रयत्न करना पड़ता है यही कार्यशैली है।5

उनके तमाम इस प्रकार के शिल्प एक प्रकार की कला अनुष्ठान हैं। ऐसे जिनमें आदिम सभ्यता के अंश हैं, आधुनिक जीवन शैली के आग्रह हैं और हैं एकांत मन के अनगिनत विचार।6 कांस्य के मूर्तिशिल्पों को देखे तो मोम में मॉडलिंग, कास्टिंग, "लॉस्ट-वैक्स तकनीक" में पोट्रेट बनाया जिसमें गांधी जी की प्रतिमा आप देख सकते हैं और दूसरा प्रयोग डायरेक्ट कास्टिंग तकनीक इस तकनीक में मोम की स्टैच्यू या मॉडल बनाने की आवश्यकता नहीं होती है सीधे किसी जलने लायक वस्तु या आकार को मॉडल के रूप में प्रयोग कर साँचा तैयार करते हैं, त्त्पश्चात साँचा को पकाया जाता है जब वस्तु जल जाती है तो साँचा के अंदर खोखला स्थान बन जाता है इस खोखले स्थान में पिघली हुई धातु डालकर वस्तु को कांस्य में परिवर्तित कर लेते हैं। शान्तिकारी ने मुख्य रूप से इस तकनीक के द्वारा पेड़ों की छाल को कांस्य में रूपांतरित किया है यह एक मजेदार ढलाई तकनीक है।

चित्र 6 पेड़ों की छाल, कांस्य मूर्तिशिल्प
तस्वीर का श्रोतः लेखक

चित्र 7 गांधी जी, कांस्य मूर्तिशिल्प
तस्वीर का श्रोतः लेखक

शान्तिकारी बनारस और गंगा घाट को अपनी प्रेरणा स्रोत के रूप में देखते रहे हैं और उस माध्यम से अपने सरल विचारों की व्याख्या करते रहे हैं मूर्तिशिल्पों के प्रति उनका दृष्टिकोण बहुत दिलचस्प है। उनकी सोचने की गहराई और संवेदनशीलता को इनके मूर्तिशिल्पों में देखा जा सकता है, जो की बहुत दुर्लभ है। बनारस और बनारस के घाटों पर इस तरह के काम और खासतौर से टेराकोटा का म्यूरल बनाया है, जिसमें सभ्यता का उत्थान-पतन दिखाई दे रहा है। इसमें उन्होंने पूरे बनारस को एक टेराकोटा म्यूरल में समाहित कर दिया है उनकी हर एक रचना अद्वितीय है और हर रचना में लय और ताल हैं। शान्तिकारी का संगीत

में भी बहुत रुझान था, इनके काम संगीतमय भी दिखाई देते है। यह सारी चीज उनके टेराकोटा म्यूरल में भी दिखाई देती है मेरा जो उनके कलाकृतियों को समझने का दायरा है उसमें हमें दो चीज समझ में आती हैं कि उन्होंने जीवन को गहराई से समझा और जो कुछ महसूस किया उसको अपने अभिव्यक्ति के द्वारा मूर्तिकला में प्रस्तुत किया।

दूसरी बात मुझे लगता है कि शान्तिकारी के कामों में जो संवेदनशीलता एवं सरलता है और विषय के रूप में सबसे पहले उनका प्यार प्रकृति की तरफ है, छोटे-छोटे आकार की रचना करते थे जैसे- चिड़िया, जानवरों के आकार और आसपास के परिवेश, वातावरण आप उनके सभी कामों में देख सकते हैं और यह एक खास तरीके का एकीकृत अलंकरण ;प्दजमहतंजमक चंजजमतदद्ध विशेष रूप से एक ही आकार को एक सतह पर नियमित अंतराल पर दोहराया जाता है। मिट्टी में वह ऐसे आकारों का प्रयोग कर अपने मूर्तिशिल्पों की रचना करते थे।

चित्र 8 प्रस्तर मूर्तिशिल्प

तस्वीर का श्रोतः लेखक

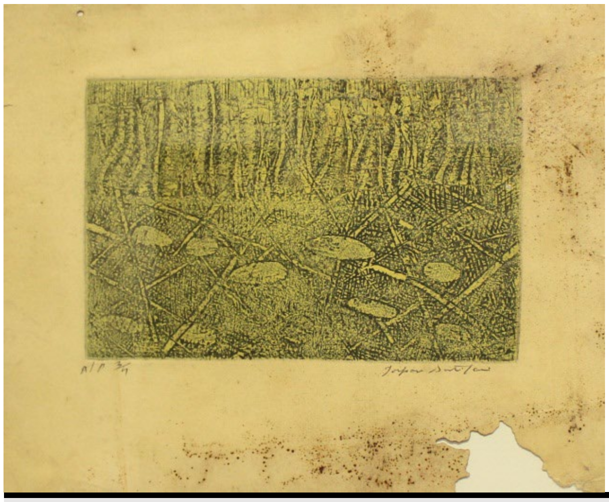

चित्र 9 छापा चित्र

तस्वीर का श्रोतः लेखक

कहीं-कहीं पर बहुत सरल आकारों में मूर्तिशिल्प बने दिखते हैं तो कहीं पर बहुत ज्यादा ज्यामितिक आकार तथा अव्यवस्थित रेखाएं भी हैं जैसे वह सब एकीकृत होकर वे सभी आपस में सामंजस्य बनाएं दिखाई देती हैं उन्होंने ऐसा संयोजन तैयार किया है।

2. निष्कर्ष

तपन शान्तिकारी की कलाकृतियों पर हम विचार करे तो यह सहजता से कहा जा सकता है कि उन्होंने जो कलाकृतियाँ बनाई उसमें संवाद की जबरदस्त संभावनाएं हैं, शान्तिकारी को कला जगत में मृणालिनी मुखर्जी, लतिका कट्ट जैसे अन्य कलाकारों की तुलना में बहुत प्रसिद्धि तो नहीं मिली परंतु वह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मूर्तिकला विभाग में कला शिक्षक के रूप में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनके मूर्तिशिल्पों का असर एक लंबे दौर तक वहां से कला शिक्षा प्राप्त किये कलाकारों पर देखा जा सकता है, बहरहाल श्यामलदास गुप्ता की एक टिप्पणी से इस आलेख को समाप्त किया जा रहा है जिसमें तपन शांतिकारी के कलाकर्म के बारे में बताते हुए कहा “बनारस और बनारस के घाटों पर इस तरह के काम और खासतौर से टेराकोटा का म्यूरल बनाया है सब कुछ मिला कर सभ्यता का उत्थान-पतन दिखाई दे रहा है इतना संवेदनशील काम मैंने कहीं और नहीं देखा, ये अद्वितीय मूर्तिशिल्प हैं“।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Bharadwaj, V. (2011). The Path of Art, First Edition, Rajkamal Prakashan, New Delhi. Page No. 130, 104, 131.

Gupta, S. (2023). Statement on the Artworks of Tapan Shantikari, Ram Chhatpar Shilp Nyas, Varanasi.

Rajesh. Shilpakaash of Inner Sensations, Issue 49, Page No. 85. Contemporary Art, Lalit Kala Akademi, New Delhi.

Kapur, G. (2000). When Was Modernism – Essays on Contemporary Cultural Practice in India. New Delhi: Tulika Books